BA-I
Paper-I
Unite-I

Dr. Raj Gopal
Assistant Professor (G/P/T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID:- rajgopal7756@gmail.com

Basic Introduction of Indian Philosophy
(भारतीय दर्शन : सामान्य परिचय)

प्रत्येक दार्शनिक चिंतन अपने भौगोलिक परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं का उपज होता है। जैसे ब्रिटेन में यथार्थवाद एवं अनुभववाद, अमरीका में अर्थक्रियावाद एवं जर्मनी में बुद्धिवाद एवं प्रत्ययवाद इसका उदाहरण है। उसी प्रकार से भारत जो की उत्तर में हिमालय से लेकर पश्चिम में हिन्दुकुश पर्वत तक फैले भौगोलिक क्षेत्र को भारत के नाम से जाना जाता है इस क्षेत्र के दार्शनिक चिंतन को भारतीय दर्शन कहते हैं। इसमें भी परिस्थितिजन्य आवश्यकताओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय अध्यात्मवाद इसी रूप में देखा जाता है। भारतीय दर्शन भौतिकवाद एवं अध्यात्मवाद का समन्वय करते हुए अध्यात्मवाद की ओर प्रवृत्त हुआ है।

दर्शन शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'दृश' धातु से हुआ है जिसका अर्थ 'देखना' या जानना है। अर्थात जीवन और जगत के प्रति दृष्टिकोण रखना है। मनुष्य की ज्ञान की पिपासा का तृप्त करना, सत्य की खोज में रहना, भगवान तथा दृश्य जगत की सभी तत्वों की जानकारी प्राप्त करना दर्शनशास्त्र का मूल बिन्दु है। इस प्रकार से संसार के विभिन्न महापुरुषों द्वारा संसार के विभिन्न पहलुओं पर चिंतन के पश्चात अर्जित ज्ञान को दर्शनशास्त्र कहते हैं। भारत में प्राचीन काल से ही दर्शनशास्त्र ज्ञान की एक स्वतंत्र के रूप में रहा है। यह सभी विज्ञानों का तार्किक आधार प्रदान करके उनका मार्गदर्शन प्रदान किया है।

Scanned with CamScanner

दर्शन शब्द को अंग्रेजी भाषा में Philosophy (फिलॉसफी) कहते हैं। जो कि यूनानी भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है। – Philos तथा Sophia। Philos का अर्थ है प्रेम तथा Sopha का अर्थ है ज्ञान। इस प्रकार से दर्शन का पूर्ण अर्थ होता है ज्ञान से प्रेम करना। मनुष्य अपने जीवन और चारों ओर फैले संसार के रहस्य को जानने को इच्छुक रहता है। मानव सभी प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करना चाहता है। यही दार्शनिकता है।

भारतीय विचारधारा में दर्शन का जीवन के साथ अनिवार्य संबंध है। भारत में दर्शन का विकास केवल बौद्धिक पिपासा को शान्त करने के लिए नहीं हुआ है। बल्कि इसका विकास दार्शनिक चिन्तन से प्राप्त ज्ञान को कैसे मानव के लिए उपयोगी बनाये, एवं कैसे जीवन की समस्याओं को सुलझाएँ। जहाँ पाश्चात्य दर्शन केवल बौद्धिक पिपासा की तृप्ति के लिए उत्पन्न हुआ है। वहीं भारतीय दर्शन जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए उत्पन्न हुआ है। इसमें लोक कल्याण की भावना निहित है। बौद्ध दर्शन में बोधिसत्व की अवधारणा एवं अन्य भारतीय दर्शनों में जीवनमुक्ति की अवधारणा इस बात पर बल देता है कि भारतीय दर्शन जीवन की समस्या का साधक है।

दर्शन शब्द को व्यापक रूप में देखा जाय तो यह आत्मा परमात्मा के स्वरूप तथा ब्रह्मांड की व्याख्या करना तथा मानव जाति के विभिन्न समस्याओं ज्ञान विज्ञान आदि का तर्कपूर्ण ढंग से विवेचन करता है। जैसे प्रकृति का रहस्य क्या है? जीवन क्या है? जीवन का उद्देश्य क्या है? और जीवन का अंत क्यों होता है? इस संसार को चलाने वाली शक्ति कौन है? मृत्यु के बाद क्या होता है? आत्मा परमात्मा का क्या संबंध है? आदि। इस प्रकार से किसी भी वस्तु अथवा कार्य का तर्कपूर्ण ढंग से विवेचन करनेवाली कला को दर्शनशास्त्र कहते हैं।

Scanned with CamScanner

डॉ० राधाकृष्णन के अनुसार दर्शन वास्तविकता के स्वरूप की तर्कसंगत खोज है। (Philosophy is a logical enquiry in the nature of reality)

भारतीय दार्शनिक विचारधारा मानव मात्र के कल्याण की भावना से विकसित हुआ है। संपूर्ण भारतीय दर्शन का विकास मानवता को दुःखों से मुक्ति दिलाने के लिए हुआ है। अधिकांश भारत में व्यक्ति का परम लक्ष्य मोक्ष को माना गया है। कहीं कहीं मोक्ष का अर्थ दुःखनिवृत्ति है तो कहीं मोक्ष का अर्थ दुःखनिवृत्ति के साथ-साथ आनन्दप्राप्ति भी है। इसी परिप्रेक्ष्य में भारतीय विचारकों ने अहिंसा, सत्य अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य आदि मानव मात्र का आचरण एवं मोक्ष प्राप्ति का साधन घोषित किया है। जैन दर्शन का मानना है कि 'जीवन ज्ञान के लिए नहीं है अपितु ज्ञान जीवन के लिए है। भारतीय दर्शन वर्ण, जाति, भाषा, और देश-काल की सीमाओं का अतिक्रमण करके प्राणिमात्र के शुभ और कल्याण की कामना करता है। इसीलिए अभिव्यक्ति 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' और 'वसुधैव कुटुम्बकम' जैसे उद्घोषों में होती है। जिस प्रकार से सभी नदियाँ विभिन्न मार्गों से चलकर एक ही लक्ष्य सागर तक पहुँचती हैं। उसी प्रकार से सभी भारतीय दार्शनिकों का एकमात्र लक्ष्य 'प्राणिमात्र का कल्याण' है। इस प्रकार से भारत में दर्शन और जीवन में व्यक्ति का संबंध है। दर्शन वही है जो जीवन का साधन है। इस प्रकार से भारत में दर्शन का अध्ययन केवल ज्ञान प्राप्त करने के लिए नहीं बल्कि जीवन के चरम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है।

Scanned with CamScanner